तमस

हिंदी साहित्य में देश विभाजन की त्रासदी पर विपुल लेखन हुआ है।बँटवारे के इस दर्द को कई रचनाकारों ने अपनी कलम द्वारा अभिव्यक्त किया है। हिंदु और मुसलमान भाइयों के बीच सांप्रदायिकता की ऐसी आग लगाई जिससें सारी मानवता आहत हुई हैं। रिश्ते – नाते दम तोड रहे है। एक ही देश में दो भाई धर्मांधता में एक दूसरे के खून के प्यासे हो गए । 1947 में आजादी मिली किंतु बँटवारे की कीमत चुकाकर । वर्तमान समय में उसकी त्रासदी को बयान करना मुश्किल है। रक्तपात और मृत्यु के भीषण आतंक का यह समय था । 'मजहब नहीं सीखाता, आपस में बैर रखना' किंतु इसी मजहबी कर्मकांड में मानवता चूर चूर हो गई। परिवार बिछड गये। बच्चे अनाथ हुए । औरतों की इज्जत नीलाम हुई। धर्मांधता के कहर में सब नष्ट – भ्रष्ट हो गया । आजादी के 70 साल बाद भी स्थितियाँ सामान्य नहीं हुई है। राजनेता, धर्म के ठेकेदार अपने स्वार्थ के लिए हिंदु मुसलमानों में द्वेष निर्माण करते हैं। धार्मिक सौहार्द की बजाए धार्मिक उन्माद को आसरा देते हैं। यही वजह है हिंदी के तमाम रचनाकारों ने अपने साहित्य के माध्यम से सांप्रदायिक सद्भाव स्थापित करने की कोशिश की है। यशपाल, कमलेश्वर, राही मासुम रज़ा, अमृता प्रीतम, खुशवंत सिंह, असगर वजाहत समेत कई रचनाकार है जिन्होंने हिंदु –मुस्लिम एकता को अपनी रचनाओं का विषय बनाया है। भीष्म साहनी का 'तमस' उपन्यास भी हिंदु–मुस्लिम सांप्रदायिक वाद एवं देशविभाजन की त्रासदी पर आधारित है।

भीष्म साहनी का परिचयः–

भीष्म साहनी का जन्म 8 अगस्त 1915 को रावलपिंडी (अब पाकिस्तान) में हुआ। उनके पिता श्री हरबंसलाल साहनी तथा माता का नाम श्रीमती लक्ष्मी देवी था । वे अपने माता – पिता की सातवीं संतान थे । हिंदी फिल्मों के मशहूर अभिनेता बलराज साहनी उनके बड़े भाई थे । भीष्म साहनी के पिता आर्य समाज की विचारधारा से प्रभावित थे। रामायण, महाभारत जैसी महान रचनाओं का पठन – पाठन करते थे । इसी से प्रभावित होकर लेखक का नाम 'भीष्म' रखा गया । अपने परिवार के संदर्भ में वे लिखते हैं **''मूलतः हम लोग पंजाब के शाहपुर जिले में स्थित भेरा नाम के कस्बे (जो आज पाकिस्तान में है।) के रहनेवाले है, जिसे छोड़कर हमारे पूर्वज रावलपिंडी में जाकर बस गए थे। भेरा जेहलम नदी के तटपर स्थित, सदियों पुराना कस्बा है जो उस जमाने में वाणिज्य और व्यापार का केंद्र हुआ करता था। पिताजी व्यापारी थे साथ ही समाजसुधार का कार्य भी करते थे । वे मानते थे कि शुध्द आचरण एवं कर्मशीलता से ही लक्ष्य की प्राप्ति संभव है।''** इनके इसी विचारों का गहरा प्रभाव भीष्म साहनी के व्यक्तित्व पर हुआ। अपने बड़े भाई बलराज साहनी से उन्हें बहुत कुछ सीखने को मिला।

भीष्म साहनी ने 1935 में गवर्नमेंट कॉलेज (लाहौर) से अंग्रेजी में एम.ए. की उपाधि अर्जित की। बाद में डॉ. इंद्रनाथ मदान के निर्देशन में 'concept of the hero is the novel' इस विषय पर अपना शोध कार्य पूर्ण किया। कुछ दिनों तक अपने पिता के साथ व्यापार में सहयोग दिया। यह आजादी और स्वतंत्रता आंदोलन का समय था। काँग्रेस के नेतृत्व में आजादी की लड़ाई शुरू थी। भीष्म साहनी ने भी स्वतंत्रता आंदोलन की लड़ाई में बढ़ – चढ़कर हिस्सा लिया। सन 1942 के भारत छोड़ो आंदोलन में भी उन्होंने सक्रिय भूमिका निभायी । काँग्रेस के साथ जुड़कर काम भी किया ।

भीष्म साहनी का बचपन में उर्दू साहित्य के प्रति विशेष लगाव था। पिताजी भी उन्हें शेरो–शायरी सुनाया करते थें। उन दिनों प्रेमचंद और सुदर्शन उनके पसंदीदा रचनाकार थे। उनके व्यक्तित्व और रचनाओं पर प्रेमचंद के साहित्य का प्रभाव लक्षणीय है। भीष्म साहनी ने प्रेमचंद की परंपरा को आगे ले जाने में विशेष उल्लेखनीय योगदान दिया है। 'अबला' नामक कहानी से उनकी साहित्य यात्रा शुरू होती है तो उनकी दूसरी कहानी 'नीली' आंखे' उन्हें साहित्य जगत में पहचान दिलाती है। यह कहानी अमृतराय के संपादकत्व में 'हंस' में छपी थी। भीष्म जी को नाटक खेलने और देखने का भी शौक था। स्थानीय कॉलेज में पढ़ाते समय कई नाटकों में उन्होंने अभिनय भी किया था। बॅटवारे के बाद भारत आने पर वे भारतीय जन नाटय संघ से जुडे। पत्रकारिता में लेखन कार्य किया। 1957 में मास्कों में विदेशी भाषा प्रकाशन ग्रह में अनुवादक के रूप में कार्य किया । 1963 में वापस आने पर दिल्ली विश्वविदयालय में प्रोफेसर के रूप में अध्यापन कार्य किया। 1965 में 'नई कहानियॉ' नामक पत्रिका का संपादन कार्य भी किया।

भीष्म साहनी बहुमुखी प्रतिभा के धनी थे। लेखन, अभिनय पत्रकारिता एवं संपादन आदि सभी क्षेत्रों में उन्होंने अपनी पहचान बनायी थी। वे कलम के सिपाही थे और आजीवन उसके प्रति इनामदार रहे। बंटवारे का दर्द उन्होंने सहा था। उस अमानवीय घटना के वे जश्मदीद गवाह थे। इसीलिए विभाजन का दर्द उनकी रचनाओं में भरा पड़ा है। समाज में स्थित अन्य समस्याओं और प्रश्नों को भी उन्होंने उठाया है । वे एक प्रतिबध्द रचनाकार है। इनके संदर्भ में नामवर सिंह कहते हैं **''भीष्म साहनी वर्तमान हिंदी जगत के उन थोड़े से लेखकों में है, जो सच्चे अर्थों में धर्मनिरपेक्ष और प्रतिबध्द है। खास बात यह है कि वे अपनी रचनाओं में इस आस्था का ढोल नहीं पीटते। यह विशेषता उनके व्यक्तित्व का अभिन्न अंग है कि इसे उन्हें दिखावे की जरूरत नहीं पड़ती । उनके सौम्य, शालीन, सहज और विनम्र व्यक्तित्व के साथ विचारों की दृढ प्रतिबध्दता इतनी घुलमिल गई है कि कभी – कभी उसके बारे में भ्रम भी होता है। बिना आक्रामक हुए भी कोई लेखक प्रतिबध्द हो सकता है, इसकी सर्वोत्तम मिसाल भीष्म साहनी है।''** भीष्म साहनी के इस व्यक्तित्व की झलक उनकी रचनाओं में मिलती है

भीष्म साहनी का साहित्यिक परिचयः–

भीष्म साहनी आधुनिक हिंदी साहित्य के सशक्त हस्ताक्षर थे। उन्होंने उपन्यास, कहानी, नाटक, जीवनी, आत्मकथा आदि तमाम विधाओं में लेखन कार्य किया है। उनका साहित्यिक परिचय निम्नतरह से –

1) उपन्यास :–

झरोखे (1967) तमस (1973) बसंती(1980) मैयादास की माड़ी(1988) कुंतों (1993) नीलू नीलिमा नीलाफर (2000)

2) कहानी संग्रह–

भाग्य रेखा(1953) पहला पाठ(1957) भटकती राख (1966), पटरियाँ (1973) वाड़चू (1978) शोभायात्रा(1981), निशाचर(1983) पाली(1989), डायन(1998)

3) नाटक साहित्य–

हानुश(1977), कबिरा खड़ा बाजार में(1981), माधवी(1984), मुआवजे(1993) रंग दे बसंती चोला(1996), आलमगीर(1999)

4) जीवनी– मेरे भाई बलराज

5) आत्मकथा – आज के अतीत (2003)

6)बाल साहित्य – गुलेल का खेल (1989)
और वापसी (1989)

7) पुरस्कार एवं सम्मान –

भीष्म साहनी जी को अपने साहित्यिक योगदान के लिए 'पद्मभूषण' पुरस्कार से सम्मानित किया गया है।'तमस' उपन्यास के लिए उन्हें 'साहित्य अकादमी' पुरस्कार और हिंदी अकादमी, दिल्ली से 'शलाका सम्मान' प्राप्त हुआ है। साथ ही सोवियत लैंड नेहरू पुरस्कार से भी वे सम्मानित हुए है।

'तमस' उपन्यास का कथानक

'तमस' उपन्यास देश विभाजन की त्रासदी का प्रामाणिक दस्तावेज है। इसमें 1947 के मार्च अप्रैल में हुए भीषण सांप्रदायिक दंगों के पाँच दिनों की कहानी अंकित हुई है। लेखक ने इन सांप्रदायिक दंगों की सामाजिक, राजनीतिक पृष्ठभूमि का मार्मिक विवेचन किया है।

उपन्यास के आरंभ में ही भयावह एवं त्रासदी भरी स्थिति का चित्रण है। मुराद अली के कहने पर एवं पांच रूपए की लालच में आकर नत्थु चमार सुअर को मारने के लिए कोठरी में ले आता है। वह कई घंटों तक सुअर को मारने की कोशिश करता है। इन दोनों के बीच का संघर्ष एवं कोठरी की भयावह स्थिति भविष्य में घटनेवाली भयावहता का निर्देश करती है। लेखक वर्णन करते हैं **''आले में रखे दीयें ने फिर से झपकी ली। ऊपर, दीवार में छत के पास से दो ईटे निकली हुई थी। जब – जब वहाँ से हवा का झोंका आता, दीये की बत्ती झपक जाती और उसमें से उठनेवाली धुएँ की लकीर आले को चाटती हुई फिर से उपर की और सीधे रूख जाने लगती। नत्थु की सॉस धौंकनी की तरह चल रही थी और उसे लगा जैसे उसकी सांस के कारण ही दीये की बत्ती झपकने लगी है।''** (पृ.7) यह सारा वर्णन भयावह बिंब का निर्माण करता है। मुराद अली झूठ बोलता है कि सलोतरी साहिब को डॉक्टरी काम के लिए मरा हुआ सुअर चाहिए। असल में वह अंग्रेजों के इशारे पर काम करता है। अगली सुबह मरा हुआ सुअर मस्जिद के सामने डाला जाता है। खबर आग की तरह फैलती है। मुसलमान समाज इसे हिंदुओं की करतूत समझकर गाय को काँटकर मंदीर के सामने डालते हैं। सारा माहौल डर एवं भय में परिवर्तित हो जाता है। हिंदु, सिख और मुसलमान एक – दूसरे को मारने के लिए बेकाबू हो जाते हैं।

शहर को इस दंगे – फसाद से बचाने के लिए काँग्रेस, मुस्लिम लीग एवं अन्य सदस्य डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड से मिलने जाते हैं। वे सरकार की तरफ से जल्द ही कार्यवाही करने या जनता कर्फ्यू लगाने की अपील करते हैं किंतु रिचर्ड अपने सीमित अधिकारों की बात कहकर सदस्यों की अपील को टाल देता है। अब धीरे – धीरे आग फैलने लगती है। और कई हिंदु सिख मुसलमानों की लाशे गिरने लगती है। हर कोई मरने मारने की तैयारी में जूट जाता हैं अखाड़ा के संचालक मास्टर देवव्रत के नेतृत्व में रणवीर जैसे कई युवाओं को लड़ाई का प्रशिक्षण दिया जाता है। तो वही मुस्लिम मुहल्ले में भी लोग गुट बनाकर हमले की तैयारी करते हैं। सभी अपने धर्म का अपमान समझकर बदले की आग में झुलसते हुए मनुष्यता को त्यागकर मजहब के नामपर दो टुकडो में बँट जाते है।

शहरों में फैली आग जल्द ही गांवों को भी अपनी चपेट में लेती है। यहाँ पर भी लूट, हत्या और आग का तांडव शुरू होता है। इसमें ढोक, इलाहीबख्श, खानपुर, सैयदपुर आदि

गावों में भी लूटपाट मचती है। ढोक इलाहीबख्श गांव के हरनामसिंह एवं बन्तों का जीवन ध्वस्त हो जाता है। उनकी दुकान लूटी जाती है और उसमे आग लगायी जाती है। करीमखान की वजह से उनकी जान बच जाती है। किंतु बिना छत्रछाया के वे दर दर की ठोकरे खाते हैं। दरअसल हर गांव की यही कहानी है। सारा परिवेश आगमय हो जाता है। इन दिनों में अंग्रेज सरकार की तरफ से कोई कार्यवाही नहीं होती है। बल्कि दंगाइयों को खुली छूट दी जाती है।

सैयदपुर नामक गांव में भी दहशत और आतंक की स्थिति है। गांव के सभी सिख एक गुरूद्वारे में आसरा लेते है। सभी औरतें अपने संघर्षशील इतिहास को याद करते हुए बलिदान के लिए तैयार होती है। जत्थेदार किशनसिंह सुरक्षा का प्रबंध करता है। तो गांव के मुखिया सरदार तेजासिंह अपने सिख भाईयों को लड़ने और कुर्बानी देने के लिए प्रेरित करता है। तो वही गुरूद्वारे के पीछे दो गलियॉ छोडकर शेख गुलाम रसुल के मकान को मुसलमानों ने अपना किला बनाया है। दोनों एकदूसरे पर हमला करने की फिराक में है। मगर एक ही गाव में रहनेवाले, एक दूसरे को पहचानने वाले ये लोग आपस में संवाद नहीं करते। इनके भीतर एक दुसरे के प्रति हीनभावना है। लेकिन सोहनसिंह एवं मीरादाद झगड़े की बजाए सुलह की बात करते हैं। वे अंग्रेजों की नीति से परिचित है। यह भी जानते हैं कि अंग्रेज जानबूझकर हिंदू, सिख और मुसलमानों के बीच झगड़ा करवाते हैं ताकि भारत पर हुकुमत करना आसान हो। सोहनसिंह कहता है, **''हम लोगों को मुसलमानों के खिलाफ भड़काया जा रहा है और मुसलमानों को हमारे खिलाफ भड़काया जा रहा है। हम झूठी अफवाहे सुन – सुनकर एक – दुसरे के खिलाफ तैश में आ रहे हैं। हमें अपनी तरफ से पूरी कोशिश करनी चाहिए कि गांव के मुसलमानों के साथ मेल जोल बनाए रखे और हत्तुलवसा कोशिश करे कि गांव में फसाद न हो ।**(पृ.102) लेकिन सोहनसिंह और मीरादाद की बातों को नजरअंदाज किया जाता है। उनकी तुलना कायर और गद्दार से की जाती है। ऐसे में कई बलवाई बाहर से आते हैं, जिससे मुस्लिमों की ताकद बढ़ती है। दोनों के बीच घमासान युध्द होता है। दो दिन और दो रात तक यह चलता है। धीरे धीरे सिख कमजोर पड़ते है। पराजय समीप जान सारी औरतें अपने बच्चों समेत कुएँ में कुदकर जान देती है।

दंगे फसाद के पांचवे दिन अंग्रेज सरकार द्वारा कार्यवाही शुरू होती है। हवाई जहाज आसमान में रेंगने लगते है। मंदीर – मस्जिद के सामने हथियार बंद पुलिस तैनात हो जाती है। शहर में जनता कर्फ्यु लगाया जाता है। किंतु इन चार दिनों में सामाजिक व्यवस्था बिखर जाती है। और एक दूसरे के मन हमेशा के लिए विषैले बन जाते हैं। सरकार की तरफ से रिफ्युजी कैम्प लगवाए जाते हैं, जिसमें 20 गावों से आनेवाले लोगों के ठहरने की व्यवस्था की जाती है। रिलीफ कमिटी मार्फत मुआवजे हेतु जानकारी इकट्ठा करने के लिए अधिकारी नियुक्त किये जाते हैं । कुलमिलाकर 103 गांव इन दंगों की चपेट में आ जाते है। मरनेवालों की तो गिनती ही नहीं है। बस एक समानता है, मरनेवाले गरीब, असहाय लोग थे। दंगे के आतंक में भी अमीर लोग सुरक्षित थे। अब सरकार द्वारा अमन कमेटी गठित की जाती है। यह कमेटी बस में बैठकर गांव – गांव जाकर अमन और शांति बनाने की अपील करेगी । इस कमेटी के चयन को लेकर काफी विवाद होता है। अंत मे सात मुसलमान, पाँच हिंदू एवं तीन सिख इस फॉर्मुले पर सबकी रजामंदी होती है। बस आ जाती है। सभी लोगों के बाहर आने पर 'हिंदू – मुस्लिम एक हो; । हिंदू– मुस्लिम इत्तहाद – जिंदाबाद, अमन कमेटी जिंदाबाद

के नारे गुंजने लगते हैं। सभी झाक झांककर बस के अंदर देखते हैं कि कौन बस में पहले ही बैठकर आया है। जैसे, **''ड्रायवर की सीट पर एक आदमी हाथ में माइक्रोफोन पकड़े बैठा था। बहुत लोगों ने उसे नही पहचाना। कुछेक ने पहचान भी लिया । नत्थु मर चुका था, वरना नत्थू यहॉ मौजूद होता तो उसे पहचानने में देर नही लगती । मुराद अली था। काले चेहरे और कॅटीली मुछेवाला मुराद अली उसकी पतली सी छड़ी उसकी टाँगों के बीच पड़ी थी और छोटी – छोटी आंखे दाएं – बाएं देखे जा रही थी और लाउडस्पीकर में से नारे गूँज रहे थे।** (पृ.143) जिसके कारण शहर, गांव आग में झुलस रहे थे वही अंग्रेजों का एजंट मुरादअली हिंदू – मुस्लिम एकता के नारे लगा रहा था।

'तमस' उपन्यास की मूल संवेदना

'तमस' विभाजन की त्रासदी पर आधारित उपन्यास है। इसमें सांप्रदायिक दंगों में झुलसते आम लोगों की कहानी अभिव्यक्त हुई है। लेखक ने इस त्रासदी को स्वयं महसूस किया है। लोगों की पीड़ा, दर्द और व्यथा को अपनी आंखों से देखा है। यह कहानी स्वानुभूति पर आधारित है। हिंदू – मुसलमान कई सालों से एक साथ रहते आए है। उनकी जीवन पध्दति, धर्मसाधना भले ही अलग – अलग है किंतु उनका जीवन एक – दूसरे में घुल – मिल गया है। एक – दूसरे की हर खुशी और त्यौहार में वे सम्मिलित होते है। सामान्य मनुष्य हिंदू और मुसलमानों में कोई भेद नहीं करते है। किंतु अपने राजनीतिक स्वार्थ को हासिल करने के लिए इन्हें धार्मिक षडयंत्र में उलझाया जाता है। तमस इसी दांवपेच और षडयंत्र की निर्मिति है। 'तम' का एक अर्थ होता है 'अंधकार'। सियासी ताकते झूठी और फरेबी अफवाहों के अंधकार में हमें उलझाती हैं। लेखक ने उस अंधकार को मिटाने के लिए विभाजन की पृष्ठभूमि की सच्चाई को अभिव्यक्त किया है।

1) सांप्रदायिकता –

सांप्रदायिकता एक राजनीतिक षडयंत्र है। दरअसल किसी संप्रदाय को धार्मिक संगठन का रूप देना ही सांप्रदायिकता है। भारतीय समाज सांप्रदायिकता के कहर को भुगत चुका है। उसके जख्म आज भी ताजा है। हम सब अपने धर्म और रीति – रिवाजों का सम्मान करते है। लेकिन सांप्रदायिकता हमें अन्य धर्मों से ईर्ष्या करना सीखाती है। जिसमें हमेशा सामान्य मनुष्य ही तबाह होता है। 'तमस' उपन्यास में भी अंग्रेजों द्वारा जन मानस में सांप्रदायिकता के बीज बोये जाते है। अपने ही लोग अंग्रेजी सियासत के गुलाम बनकर अपनों पर ही कहर बरसाते हैं। मुराद अली ऐसा ही स्वार्थी व्यक्ति है। सुअर को मारने की घटना सांप्रदायिक दंगों को आमंत्रण देती है। जिससे शहर ही नहीं कई गांव तबाह हो जाते है। उपन्यास में इस सांप्रदायिकता से अधजले शहर का बड़ा ही मार्मिक बिंब अंकित हुआ है।

जैसे, ''**दिन के उजाले में शहर अधमरा – सा पड़ा था, मानो उसे साँप सूँघ गया हो। मंडी अभी भी जल रही थी, म्युनिसिपैलिटी के फायर ब्रिगेड ने उसके साथ जूझना कब का छोड़ दिया था। उसमें से उठनेवाले धूएँ से आसमान में कालिमा पुत रही थी, जबकि रात के वक्त आसमान लाल हो रहा था। सत्रह दूकाने जलकर राख हो चुकी थी।**'' (पृ.73) यह उन शहरों और कस्बों का चित्र है जहॉ हमेशा गपशप और भीड़ जमी रहती थी । अब शहर और गांव अधजले स्थिति में अपने मिट़ते अस्तित्व पर रो रहे है। सांप्रदायिकता के इस कहर में लगभग 103 गांव जलकर राख हो चुके हैं। वहां की आबादी गायब है। लाशे बिखरी पड़ी है। बलात्कार पीड़ित औरते गुलामी का जीवन जीने के लिए अभिशप्त है। सामाजिक व्यवस्था टूट चूकी है। परिवार बिखर गए है। हर जगह आक्रोश और चीखे सुनाई दे रही हैं । ये आवाजें किसी एक धर्म के व्यक्ति की नहीं है। यह सामाजिक हत्या है, जिसमें हर धर्म का व्यक्ति शामिल है ।

सांप्रदायिकता हमारे समाज को लगा हुआ कलंक है। इसमें हमेशा बेगुनाह ही तबाह होते हैं । सामान्य लोगों को अन्य धर्म और जाति के खिलाफ भड़काया जाता है। ईश्वर और धर्म का भय दिखाकर उन्हे शस्त्र उठाने के लिए मजबूर किया जाता है। जो धर्म की लड़ाई के खिलाफ है उन्हे कायर और गद्दार कहकर समाज से बहिष्कृत किया जाता है। लेखक ने उपन्यास के माध्यम से उस सामान्य जनता को सावधान किया है जो नत्थु चमार की भाँति इनके जाल में फसता है। दरअसल हर धर्म हमें दूसरे धर्म की रक्षा और सम्मान करने की सीख देता है। अब जरूरत है कि हम भी अन्य समाज की जीवनपध्दति सभ्यता, संस्कृति का सम्मान करते हुए सांप्रदायिकता रूपी बीज को हमेशा के लिए उखाड़कर फेंक दे ।

2) अंग्रेजों की नीति –

उपन्यास में 1947 का समय चित्रित हुआ है। अंग्रेज अधिकारियोंने हमेशा 'तोड़ो फोड़ो और राज्य करो' नीति का अवलंब किया । आजादी का समय नजदीक आ रहा था। किंतु अंग्रेजों की नीति ने भारत को दो टुकडों में बॉट दिया। अंग्रेज अधिकारी रिचर्ड डिप्टी कमिश्नर है। उसे भारत और भारतीय लोगों का इतिहास पता है। उसने सहज एवं मिलनसार व्यक्ति के रूप में अपनी पहचान बनाई है। लेकिन उसके मुखौटे के पीछे एक शातिर अफसर काम करता है। मुराद अली उसी का नुमाइंदा है। हिंदु – मुसलमानों को भड़काना अंग्रेज नीति का ही हिस्सा है। लीजा उसकी पत्नी है। रिचर्ड और उसकी पत्नी के संवाद के माध्यम से लेखक ने अंग्रेजों की खोखली और स्वार्थी नीति को अभिव्यक्त किया है। लीजा बाहर चल रहे दंगों के बारे में पुछती है, तो रिचर्ड बताते है कि हिंदुस्तानी छोटे से भडकाव पर भड़कने वाले है। वे चिडचिडे मिजाज के है। धर्म के नाम पर खून करनेवाले है। जवाब में लीजा

कहती है, **''बहुत चालाक नहीं बनो रिचर्ड । मैं सब जानती हूँ । देश के नाम पर लोग तुम्हारे साथ लड़ते हैं, और धर्म के नाम पर तुम इन्हें आपस में लड़ाते हो।''** **(पृ.27)** यह अंग्रेज अधिकारियों की सच्चाई है।

शहर में दंगे शुरू हो जाते है। प्रतिक्रिया स्वरूप गाय काटकर मंदिर के सामने फेक दी जाती है। अब इन दंगों को रोकने के लिए शहर का शिष्टमंडळ डिप्टी कमिश्नर रिचर्ड से मिलने आता है। वे रिचर्ड को शहर के हालात से अवगत कराते हैं। रिचर्ड पहले से ही शहर की स्थिति और घटती घटनाओं से परिचित है। वह तो खुद हिंदु – मुसलमानों की बीच की दूरी को बढ़ाना चाहता हैं। वह सभी सदस्यों से कहता है, **''मैं डिप्टी कमिश्नर हूँ, फौज का**

इंतजाम तो मेरे हाथ में नहीं है, यहाँ पर छावनी तो है, पर इसका मतलब नहीं की फौज मेरे हुक्म से काम करती है। (पृ.47) रिचर्ड से दंगों को रोकने का कोई आश्वासन नहीं मिलता लगातार पॉच दिनों तक दंगाई लूटपाट, हत्याएँ और गाँव जलाते रहे। सरकार ने जानबूझकर इन दंगाईयों को खुली छूट दे रखी थी । सारा प्रदेश खून से लाल हो जाता है। जलते गॉवों से पृथ्वी कापती है, किंतु रिचर्ड का दिल नहीं पसीजता। पांचवे दिन सरकार कार्यवाही शुरू करती है। दंगे रूक जाते है। सैयदपुर में कई औरते कुएँ में कूद जाती है। रिचर्ड को कुएँ में डिसइंफेक्टैट डलवाने जाना है, ताकि बीमारी न फैले। वह लीजा को साथ लेकर जाना चाहता है ताकि टोक्सीला का म्युजियम और आसपास का बड़ा सुंदर इलाका उसे दिखा सके। दरअसल रिचर्ड के बहाने अंगेजों की अमानवीय और अमानुष नीति उद्‌घाटित हुई है। अपने साम्राज्य को बचाने एवं बढ़ाने के लिए ये मानवता की सारी हदे लाँघते हैं।

3) राजनीतिक स्वार्थ –

धार्मिक उन्माद राजनीतिक स्वार्थ के गोद में ही पलता है। राजनेता या कार्यकर्ता अपने क्षुद्र स्वार्थ के लिए धर्म का ही दामन थामते है । उपन्यास में भी ऐसे चरित्र अंकित हुए हैं। यह अग्रेंजी हुकुमत का समय है। पूरा देश एकत्रित होकर अंग्रेजों के खिलाफ लड़ता है। राष्ट्रभक्ति के लिए अपनी जान कुर्बान करता है। अंग्रेजों ने हमेशा ही कूटनीति का उपयोग कर भारतियों को धर्म और जाति में विभाजित किया है। उनसे आज़ादी एकता के सूत्र में बंधकर ही मिल सकती थी, किंतु अंग्रेजों ने जानबूझकर हिंदु – मुसलमानों को विभाजित किया । अब धीरे – धीरे पाकिस्तान बनने की मांग उठने लगी थी। कांग्रेसी और मुस्लिम लीग के सदस्य एक – दुसरे के प्रति ईर्ष्या की भावना रखते थे। प्रभात फेरी में कॉग्रेस की ओर से 'वंदे मातरम् भारतमाता की जय, महात्मा गांधी की जय' के नारे लगते है तो मुस्लिम लीग की ओर से 'पाकिस्तान जिंदाबाद 'कायदे आजम' जिंदाबाद के नारे गुंजते हैं। यह स्थितियां भी

धीरे धीरे दो धर्मों में गहरी खायी पैदा करती है। प्रमुख नेता भी शांति और सौहार्द बनाने की बजाए आपस में उलझते हैं। आम जनता इन्हीं नेताओं का अनुकरण करती है। जैसे मुस्लिम लीग के एक नेता बख्शीजी कहते है,'' **यह सब हिंदुओं की चालाकी है बख्शीजी हम सब जानते है । आप चाहे जो कहे कॉग्रेस हिंदुओं की जमात है और मुस्लिम लीग मुसलमानों की । कॉग्रेस मुसलमानों की रहनुमाई नहीं कर सकती।'' (पृ. 20)** बख्शीजी जिला कॉग्रेस कमेटी के प्रधान है। मुस्लिम लीग के सदस्यों के साथ उनकी हमेशा टकराहट होती रहती है। सभी अपने वर्चस्व को सिध्द करना चाहते है। दंगों को रोकने के लिए हयातबख्श के घर मीटिंग ली जाती है। वे आधे घंटे तक इसी बात पर अड़े रह जाते हैं कि बख्शीजी स्वीकार करे कि कॉग्रेस हिंदुओं की जमात है । दंगे रूकने पर अमन कमेटी बनायी जाती है। इस अमन कमेटी का सदस्य होने के लिए सभी नेता आपस में लड़ पड़ते है। दरअसल आम आदमी से इनका सरोकार नहीं है। वे तो अपना राजनीतिक रूतबा बढ़ाना चाहते है जिससे चुनाव लढ़ने के लिए उन्हें टिकट मिले ।

4) धार्मिक षडयंत्र –

भारतीय समाज धर्म में गहरी आस्था रखता है। धर्म के ठेकेदारों ने इसी का फायदा उठाकर मासूम जनता को गुमराह किया है। अल्लाह या ईश्वर के नामपर इन्हें डराया जाता है। कई तथाकथित के संतों, फकीरों ने इसे बाजार बना दिया है। पुण्यात्मा वानप्रस्थीजी ऐसे संत है जो धर्म के नामपर युवाओं को भड़काते है। दंगे जब शुरू होते है, तो मंदिर में अंतरंग सभा का आयोजन होता है। इसमें मुसलमानों के खिलाफ लड़ने के लिए नीति निर्धारण किया जाता है। वानप्रस्थीजी विचलित और भावोद्वेलित होकर 'फैलाए घोर पाप यहॉ मुसलमीन ने' कहकर मुसलमानों के खिलाफ जंग का ऐलान करते हैं।युवाओं को लाठी चलाना, भाला फेंकना, तीर चलाना आदि की शिक्षा दी जाती है। वे सभी को आदेश देते है कि ''सबसे **पहले अपनी रक्षा का प्रबंध किया जाना चाहिए। सभी सदस्य अपने – अपने घर में एक – एक कनस्तर कड़वे तेल का रखे, एक एक बोरी कच्चा या पक्का कोयला रखे। उबलता तेल शत्रु पर डाला जा सकता है जलते अंगारे छतपर फेंके जा सकते है। (पृ.36)** वानप्रस्थीजी दंगों को रोकने के उपाय नहीं बताते। उनके आवेग और उत्साह को देखकर लोग भी हतप्रभ रह जाते हैं। वहीं पीर साहिब भी मस्जिद नापाक होने की खबर सुनकर चले आते हैं। उनके चमत्कार के किस्से लोकप्रचलित है। तभी मुस्लिम समुदाय में उन्हे उॅचा स्थान प्राप्त है। मगर वे हिंदुओं से नफरत करते हैं। उनको हाथ भी नहीं लगाते दरअसल इन धर्मगुरूओं द्वारा हिंदू–मुसलमान समन्वय की कोई पहल नहीं की जाती । बल्कि अपने धर्मीय लोगों को उकसाया जाता है। धर्म के क्षेत्र में अपने स्थान को मजबूत बनाने की यह कोशिश है। इनके द्वारा धर्म का ढोंग या आडंबर रचा जाता है। इसी षडयंत्र में आम आदमी फंस जाता है। इन

धर्मगुरूओं को आदर्श मानकर ही इनकी इच्छानुसार इकबालसिंह जैसे असहाय लोगों का जबर्दस्ती धर्म परिवर्तन किया जाता है। नूरदीन जबर्दस्ती इकबालसिंह के मुँह में मांस का टुकडा ठूंसता है और अपनी जीत का जश्न मनाता है।

दरअसल इन धर्मगुरूओं का मानवता या मानवीय मूल्यों की स्थापना में कोई योगदान नहीं है।

5) सांप्रदायिक दंगों में झुलसता आम आदमी–

'तमस' सांप्रदायिक दंगे और फसाद की कहानी है। दंगे जब भी भड़कते हैं सब कुछ खतम हो जाता है। इसकी चपेट में स्त्री, पुरूष, बच्चे, बूढे सभी आ जाते हैं। दंगाईयो का कोई चेहरा नहीं होता । जब भी आते है हाहाकार मचाते है,। किंतु आश्चर्य है राजनेता, अमीर लोग इसकी चपेट में कभी नहीं आते । इससे हमेशा आम आदमी की जिंदगी ही बर्बाद हुई है। आम आदमी जाति, धर्म की संकिर्ण मानसिकता से ग्रसित नहीं होता । किंतु जब भी धर्म के नामपर तलवारें, लाठियाँ उठती है इन्ही पर बरसती है। इसमें मुरादअली जैसे स्वार्थी लोग नहीं मरते, मरते है इमानदार जरनैल, दंगों को रोकने की कोशिश करनेवाले युवा सोहनसिंह, मीरदाद लुहार करीमबख्श, गली – गली सामान बेचनेवाला इत्रफरोश। इन दंगों में इनके रोजी – रोटी के संसाधन मिट चुके है। हरनामसिंह पत्नी बंतों के साथ अपनी जलती हुई दुकान देखने के लिए मजबूर है। हरनामसिंह अपनी पत्नी से कहता है,''
''**क्या है बन्तो, दुकान जल रही है, और क्या है? वह भी खड़ा उसी ओर देख रहा था। थोडी देर तक वे मंत्रमुग्ध से आग के शोलों को देखते रहे। अपने घर में से उठते हुए शोले जरूर ही किसी दूसरे के घर में से उठनेवाले शोलों से भिन्न होंगे, वरना वे क्यों मूर्तिवत खड़े के खडे रह जाते और उन्हे ताकते रहते। '' (पृ. 97)** अपने आशियाने को उजाड़ता देखना सबसे दुखद है। हरनामसिंह को तो यह पता भी नहीं है कि बेटी जसबीर ने कुएँ मे कुदकर आत्महत्या की है और बेटा इकबालसिंह का जबर्दस्ती धर्मपरिवर्तन कराया गया है। इन दंगों में 103 गांव जल गए है। इससे गरीबों का जीवन ही बाधित हुआ है। उनके ही घर की बहन – बेटियों पर अत्याचार होते है। सियासी दॉवपेच खेलनेवाले नेता, राजनेता, कार्यकर्ता, धर्मगुरू, अमीर लोग हमेशा दंगों से बच निकलते है। इतिहास गवाह है इन सांप्रदायिक दंगों मे हमेशा आम आदमी ही झुलसता रहा है।

6) हिंदू – मुस्लिम समन्वय –

हिंदू और मुस्लिम समाज की जीवन पध्दति, आदर्श, मानदंड अलग – अलग है। जिससे कई बार विवाद की स्थिति उत्पन्न होती है। ये दोनों कई वर्षो से एक ही जमीं पर जीवनयापन करते आए है। जिससे दोनों समाज के लोग एक – दूसरे की संस्कृति में घुल – मिल गए है। हर गली मुहल्ले में कुछ हिंदू और कुछ मुस्लिम परिवार होते ही हैं । अन्य धर्मीय लोग भी आत्मीय संबंध बनाकर जीवनयापन करते है। जैसे, **जहॉ से वह गली में दाखिल हुआ था वहॉ कुछ दूरी तक मुसलमानों के घर थे। एक दो धोबियों के, कुछ कसाईयों के जो गली**

के बाहर छोटी सी सड़क के किनारे गोश्त की दुकाने लगाते थें । यहीं पर महम्मूद हमामवाला भी रहता था। आगे चलकर कुछ घर हिंदुओं और सिखों के पड़ते थे और गली के अगले छोर तक पहुँचते – पहुँचते फिर मुसलमान शेखों के घर शुरू हो जाते थे। (पृ. 19) यह भारतीय समाज का सौदर्य है, जहॉ सभी भाईचारे से जीवन जीते है। सांप्रदायिक दंगों से पहले शहर और गांवों की यही स्थिति थी। दंगे– फसाद इनके विश्वास, भरोसे और भाईचारे पर आघात करते है। जिससे हिंदू – मुस्लिम समन्वय का महल बिखरने लगता है। उपन्यास में चित्रित जरनैल, राजा सोहनसिंह और मीरदाद जैसे चरित्र इस टूटते विश्वास को थामते हुए समन्वय की नयी बुनियाद रचते हैं। सियासी ताकते अपने स्वार्थ सिध्दी के लिए कितना भी जोर लगा ले यह आदर्श और मानवीय चरित्र अपने त्याग और बलिदान से दो समुदायों को बांधकर रखते हैं।

'तमस' के माध्यम से लेखक ने हिंदू – मुस्लिम समन्वय की पहल की है। अर्थात आपसी विश्वास, आस्था, और सद्भाव से ही सांप्रदायिक उन्माद को खतम किया जा सकता है।

7) **स्त्री की मनोव्यथा –**

प्रस्तुत उपन्यास में पुरूष पात्रों की तुलना में स्त्री पात्र कम ही है। जितने स्त्री पात्र मौजूद है, वे स्त्री जीवन की दुखभरी गाथा को बयान करते हैं। युध्द और दंगों में सबसे ज्यादा औरत ही पीसी जाती है। उसे हमेशा अपने से ज्यादा परिवार का खयाल होता है। बंतो ऐसा ही चरित्र है। हर पल मौत का साया उस पर मंडरा रहा है। लेकिन जब भी खुद सुरक्षित महसूस करती है बच्चों की सलामती की दुवाएँ मांगती है। जैसे, **जब भी कुछ देर के लिए उसके अपने सिर पर से खतरे का साया टल – सा जाता, उसे अपने बच्चों की याद सताने लगती थी। '' (पृ.113)** बंतो की आत्मा अपने पति और बच्चों में बसती है। उसकी दुखभरी कहानी अंततक चलती है। उपन्यास का सर्वाधिक कारूणिक प्रसंग है, जसबीर समेत अन्य औरतो का कुऍ में कूद जाना। जिस कुऍ के जल से अपने और परिवार के जीवन को सिंचित किया उसी कुऍ में सारी औरतें बच्चों समेत अपना जीवन समर्पित करती है। दंगो में औरत दोहरी मौत मरती है। उसका बलात्कार किया जाता है या उसे गुलाम बनाया जाता है। तभी तो ब्राहमण दंपति अपनी खोयी बेटी की तलाश भी नहीं करना चाहते । इन दंगो ने उसके चरित्र को दागदार किया होगा, ऐसे में मॉ बाप की दृष्टि में ऐसी बेटी को पालना मुश्किल है। यहाँ औरत का कोई कसूर नहीं होता फिर भी आजीवन वे बेगुनाही की सजा भुगतती है।

दरअसल उपन्यास में स्त्री की मनोव्यथा मार्मिकता से उद्‌घाटित हुई है।

'तमस' उपन्यास मूलत : सांप्रदायिकता पर आधारित है। आजादी से पूर्व ही हिंदू और मुसलमानों के बीच बढ़ते तनाव का चित्रण इसमें हुआ है। इसके साथ ही लेखक ने इन स्थितियों के निर्माण के पीछे घटित कारणों का भी विश्लेषण किया है।